❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 42, अंक 39 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 अगस्त, 2019 से रविवार 25 अगस्त, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

दिनांक : 11-12-13 अक्टूबर 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

आश्विन शु० 13-14-15 विक्रमी सं० 2076

कार्यक्रम स्थल - चौधरी लॉन्स, सुन्दर पुर मार्ग

निकट बी.एच.यू. मुख्य द्वार, नरिया,लंका, वाराणसी

- समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
- इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करे।
- सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
- सभी आर्यजन महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं।
- आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
- सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
- ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर भेजें।
- आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।

यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 9650183339 से संपर्क करें

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समृति न्यास वाराणसी

संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

वेद-स्वाध्याय

ब्रह्मचर्य के तपोबल की महती महिमा

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्।। - अथर्व० 11 /5/19
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता - **ब्रह्मचारी।।** छन्दः - **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - देवाः = देव, ज्ञानी पुरुष **ब्रह्मचर्येण तपसा** = ब्रह्मचर्य के तपोबल से **मृत्युम्** = मौत को **अपाघ्नत** = मार डालते हैं। **इन्द्र** = परमेश्वर व आत्मा **ह** = भी निश्चय से **ब्रह्मचर्येण** = अपने ब्रह्मचर्य के द्वारा ही **देवेभ्यः** = देवों के लिए **स्वः** = सुख व तेज को **आभरत्** = लाता है, प्राप्त कराता है।

विनय-शरीर में वीर्य ही जीवनवर्धक वस्तु है। हम इस वीर्य को जितना अधिक धारण करेंगे उतना ही हम जीवनी शक्ति से पूर्ण होंगे और मृत्यु को जीतेंगे। मनुष्यो ! यदि तुम मृत्युभय से पार होना चाहते हो तो ब्रह्मचर्य को धारण करो। सब देव जो अमर हुए हैं, ज्ञानी, सन्त, महात्मा, ऋषिलोग जो मृत्यु को भी मारे हुए निश्चिन्त बैठे हैं, वे इस स्पृहणीय अवस्था को ब्रह्मचर्य के तपोबल द्वारा ही पहुँचे हैं। शारीरिक वीर्य, मानसिक तेज और आत्मिक शक्ति को सदा रक्षित रखना, कभी भी भोग में गिरकर इसका क्षय न होने देना, यही वह कठिन ब्रह्मचर्य का तप है, जिससे कि मौत भी मारी जाती है और सच्चा परमसुख पाया जाता है। संयमी ब्रह्मचारी जिस दिव्य सुख को अनुभव करते हैं उसकी एक कला भी भोगियों को नहीं मिलती। बेचारे भोगी लोग सुख को जानते ही नहीं। यदि उन्हें सच्चे आत्मवश सुख का पता लग जाए तो वे कभी भोगों की इच्छा ही न करें। हे भाइयो! तुम उन परम ब्रह्मचारी परमेश्वर की ओर क्यों नहीं देखते? वे इन्द्र परमैश्वर्यवाले होते हुए भी त्रिकाल में भोगवासना से परे हैं और सर्वथा निष्काम हैं। इसीलिए उनके पास अपनी शक्ति का ऐसा अक्षय भण्डार संचित है कि वे देवराज अग्नि आदि सब देवों के लिए तथा सब मनुष्यदेवों के लिए तेज और सुख को अनवरत देते चले जा रहे हैं। यदि इस संसार के मूल में उन इन्द्र प्रभु का ब्रह्मचर्य न हो तो यह संसार एक क्षण-भर न चल सके। इसी प्रकार शरीर में आत्मा-इन्द्र अपने ब्रह्मचर्य द्वारा ही सब इन्द्रिय-देवों में तेज और सुख को सदा ला रहे हैं। भोगों में पड़ते जाने से इन्द्रियों का तेज सदा क्षीण होता जाता है, पर उनके आत्माभिमुख होने पर वे ब्रह्मचर्य द्वारा रक्षित आत्मा के अपार तेज और सुख से परिपूर्ण हो जाती हैं, भर जाती हैं, अतः हे मनुष्यो! यदि तुम मौत को मारना चाहते हो तो ब्रह्मचर्य की साधना करो और यदि तुम सुख पाना चाहते हो तो ब्रह्मचर्य की उपासना करो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सोचिए कहीं शाकाहार समझकर मांसाहार तो नहीं हो रहा!

मनुष्य की अतीत से एक बहस चली आ रही है कि शाकाहारी और मांसहारी भोजन दोनों में से कौनसा उत्तम है! हालाँकि अभी तक यह बहस सिर्फ धर्म और नैतिकता के तराजू में रखकर होती थी, लेकिन आजकल स्वास्थ्य के लिए कौनसा खाना ज्यादा फायदेमंद है इसके लिए चर्चा होती है। किन्तु इन दलीलों के बीच अब एक नई परेशानी खड़ी हो गयी है कि आज के फास्टफूड के युग में हमें कैसे पता चले कि कौन सी वस्तु शाकाहार है और कौन सी वस्तु मांसाहार? कहीं ऐसा तो नहीं आप शाकाहारी होने का दंभ भरते रहें पर अनजाने में शादी विवाह से लेकर होटल और रेस्तरों में आप को मांसाहार परोसा जा रहा हो?

यह सवाल इसलिए क्योंकि अभी हाल ही में एक रिपोर्ट के अनुसार कई ऐसे खाद्य पदार्थों का पता चला है जो एक शाकाहारी, भोजन करने वाले के माथे पर सलवटें खड़ी कर सकती हैं। जैसे कि आप चाव से नान खाना पसंद करते है, वह अलग बात है कि अगर आप शाकाहारी हैं और घर पर नान बनाते हैं। उसे नरम लचीला बनाने के लिए अंडे की जगह कुछ और इस्तेमाल करते हों, लेकिन होटल वाले नान को मुलायम और लचीला करने के लिए अंडे का इस्तेमाल करते हैं। दूसरा अक्सर टीवी विज्ञापनों में कुकिंग ऑयल में ओमेगा-3 और विटामिन डी आदि को सेहत के लिए खासकर आंखों और दिल के लिए बड़ा उपयुक्त बताया जाता है। लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि ओमेगा 3 मछली और विटामिन डी भेड़ की हड्डी से प्राप्त किया जाता है और उसे तेल में मिलाया जाता है।

असल में कई ऐसी वस्तुएं हैं जिनका उपयोग लोग दैनिक जीवन में करते है लेकिन वह पूर्णतया शाकाहार नहीं है। जैसे चीनी जिसे शुगर भी कहा जाता है अगर आप रिफाइन शुगर का प्रयोग करते हैं तो जान ले कि चीनी को सफेद बनाने के लिए लिए नैचुरल कार्बन का इस्तेमाल किया जाता है जो जानवरों की हड्डियों से बनाया जाता है।

इसके अलावा जैम, जैली और होटल आदि में मिलने वाले सूप में भी जानवरों और मछलियों आदि से प्राप्त की गई कई चीजों का मिश्रण होता है। यही नहीं बहुत से लोग जो शराब या बियर पीते है लेकिन मांस नहीं खाते वह अक्सर कहते पाए जाते हैं कि वह पूर्ण शाकाहारी है। लेकिन बियर, वाइन या अन्य रिफाइंड शराब को साफ करने के लिए इजिनग्लास नाम के पदार्थ का उपयोग किया जाता है, जो कि मछली के ब्लेडर से बनाया जाता है, इसलिए ये भी पूरी तरह से शाकाहारी नहीं है।

अब हो सकता है बहुत से लोग यह सोचें कि जब इन चीजों में मांस का इस्तेमाल किया जाता है तो आखिर शाकाहार क्या है? असल में शाकाहार की एक सरल सी परिभाषा यह है कि शाकाहार में वे सभी चीजें शामिल हैं जो वनस्पति आधारित हैं, पेड़ पौधों से मिलती हैं एवं पशुओं से मिलने वाली चीजें जिनमें कोई प्राणी जन्म नहीं ले सकता। उदाहरण के लिये दूध, शहद आदि से बच्चे जन्म नहीं लेते जबकि अंडे जिसे कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी शाकाहारी कहते हैं, उनसे बच्चे जन्म लेते हैं इस वजह से अंडे मांसाहार हैं।

कुछ समय पहले मांसाहार पर कई तथ्य और शोध पढ़ने को मिले इनमें एक था कि मांस हमें इस वजह से नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह एंजाइमों से भरा होता है। इसके माध्यम से नकारात्मकता और भय का संचार होता है। जब जानवरों को वधशाला या बूचड़खानों में लाया जाता है, तो उन्हें पता होता है कि उन्हें मारा जायेगा। इस कारण अपने-आप ही उनके अंदर भय, पीड़ा और दुख का भाव आ जाता है। उनकी इन भावनाओं का प्रसार उनके संपूर्ण शरीर में होने लगता है। भय और पीड़ा के कारण उनके शरीर में एड्रालिन नामक एंजाइम का स्राव होता है जिसका प्रवाह रक्त की धारा में होने लगता है। इस कारण इससे जुड़ी हर चीज नकारात्मक हो जाती है। आप भले ही मांस को कितना भी पका लें, आप इन गुणों को कभी भी नष्ट नहीं कर पायेंगे। दूसरा वैज्ञानिक रूप से हमारे दांतों की बनावट ऐसी नहीं है कि हम मांस को खा सकें। और न ही हमारा पाचन तंत्र मांसों को पचा सकता है। जब हम फल खाते हैं तो इसे एक घंटे में पचा सकते हैं। सब्जियों को हम दो घंटे में पचा सकते हैं, जबकि मांस को पूरी तरह से पचने में 72 घंटे लगते हैं। जब मांस इतने लंबे समय तक हमारी आंतों में रहता है तो यह विषाक्त हो जाता है और इसी कारण हमें कई बीमारियां होती हैं।

.....मांस, मछली और अण्डे हमारे शरीर में दुख, अशांति और तनाव पैदा करते हैं। जबकि शाकाहारी भोजन का सेवन करने वाले लोग सेहतमंद तो होते ही हैं साथ ही ऐसे लोगों को थकान भी बहुत कम लगती है। कुछ समय पहले भोजन के प्रभाव पर शोधकर्ताओं ने एक निष्कर्ष निकाला था कि इन्सान से अलग जो जानवर शाकाहारी होते हैं वो मांसाहारी की तुलना में जल्दी हार नहीं मानते हैं और अधिक परिश्रमी भी होते हैं। जैसे हाथी, बैल, घोड़ा, हिरन और ऊंट इसके विपरीत मांसाहारी जानवर कुछ देर तो दौड़ सकते है लेकिन वह जल्दी ही हांफ जाते है।.....

एक मुख्य बिंदु यह भी है कि मांस, मछली और अण्डे हमारे शरीर में दुख, अशांति और तनाव पैदा करते हैं। जबकि शाकाहारी भोजन का सेवन करने वाले लोग सेहतमंद तो होते ही हैं साथ ही ऐसे लोगों को थकान भी बहुत कम लगती है। कुछ समय पहले भोजन के प्रभाव पर शोधकर्ताओं ने एक निष्कर्ष निकाला था कि इन्सान से अलग जो जानवर शाकाहारी होते हैं वे मांसाहारी की तुलना में जल्दी हार नहीं मानते हैं और अधिक परिश्रमी भी होते हैं। जैसे हाथी, बैल, घोड़ा, हिरन और ऊंट इसके विपरीत मांसाहारी जानवर कुछ देर तो दौड़ सकते है लेकिन वह जल्दी ही हांफ जाते है। इसलिए अब आप जब कुछ खाएं तो थोडा संभलकर खाएं कहीं ऐसा न हो खुद को आधुनिक दिखाने के चक्कर में आप भी जल्दी बीमारियों को पकड़कर न हांफ जाएँ।

- सम्पादक

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

धार्मिकता की सूली पर जीसस या नन?

ईसाई धर्म दरबार में सदियों से जीसस को अपना पति स्वीकार कर समर्पित रही नन प्रथा अब धीरे-धीरे कमजोर हो रही है। उधर लोगों के जीवन स्तर को सुधारने का दावा करने वाले चर्च अपने साम्राज्यवाद के विस्तार में व्यस्त है और इधर नन अवहेलना, प्रताड़ना और शोषण की भूमि बनती जा रही है। हाल ही में केरल में एक नन को रोमन कैथोलिक चर्च के अंतर्गत आने वाली एक धर्मसभा ने सिर्फ इस कारण निष्कासन कर दिया कि नन पर कविता प्रकाशित करने, कार खरीदने और उन्होंने पिछले साल दुष्कर्म के आरोपी पादरी फ्रैंको मुल्लाकल के खिलाफ 5 नन की ओर से वायनाड में आयोजित विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था।

एक किस्म से देखा जाये तो कुछ समय पहले तक पूर्णतया आध्यात्मिक समझे जाने वाले नन के जीवन से धीरे-धीरे पर्दे उठने शुरू हो चुके हैं। पिछले कई वर्षों से गिरजाघरों की जिन्दगी से त्रस्त होकर निकली या निकाली गयी अनेकों नन चर्च से अपना मुंह मोड़ रही हैं। एक लम्बे अरसे से दक्षिण भारतीय राज्यों में खासकर केरल में महिलाओं कैरियर के अवसरों में चर्च की प्रमुखता रही थी लेकिन पिछले कई वर्षों में कॉन्वेंट के अन्दर और बाहर ननों के शोषण के एक के बाद एक मामले सार्वजनिक होने से आज केरल समेत कई दक्षिण भारतीय राज्यों की महिलाएं कान्वेंट और चर्च में जाने से कतराने लगी हैं।

अभी तक केरल राज्य जो सबसे अधिक संख्या में लड़कियों को नन बनने के भेज लिए रहा था। अब हाल फिलहाल इसकी संख्या में 75 फीसदी तक की कमी देखी जा रही है। नन बनने के इस गिरते प्रतिशत को देखते हुए दक्षिण के ईसाई धर्म संस्थान अब उत्तर और पूर्वोत्तर भारत के राज्यों की ओर दौड़ रहे है इनमें छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, असम और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों से गरीब परिवारों की लडकियों को चर्च में लाया जा रहा है।

.....वूमेन चर्च वर्ल्ड ने इस मामले का पर्दाफाश करते हुए सैकड़ों ननों की गर्भपात के लिए मजबूर होने की कहानियों को उजागर किया गया था। पत्रिका ने लिखा था कि जिन ननों में गर्भपात करवाने से मना कर दिया था बाद में उनसे पैदा हुए बच्चों को यह दिखाकर कॉन्वेंट में रख लिया कि वह अनाथ थे। हालाँकि पत्रिका में इस सम्पादकीय लेख के आने के कुछ हफ्तों बाद संपादक को पत्रिका छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया था। जबकि उसी दौरान पोप फ्रांसिस ने स्वीकार किया था कि पादरियों और बिशपों द्वारा ननों का यौन शोषण चर्च में बड़ी समस्या बन चुकी है।.....

1960 के दशक के मध्य से यदि आंकड़ा देखा जाये तो उस समय प्रत्येक राज्य से हर साल लगभग दो दर्जन ननों की भर्ती की जा रही थी और ऐसा लगभग एक दशक तक चला, किन्तु 1985 में यह संख्या धीरे-धीरे कम होने लगी थी जो अब तेजी से कम होती जा रही है। सिर्फ भारत में ही नहीं यदि देखा जाये तो साठ साल पहले संयुक्त राज्य अमेरिका में 180,000 कैथोलिक नन थीं, लेकिन वर्तमान समय में यह संख्या गिरकर 50,000 से भी कम रह गई है।

60 के दशक में विशेष रूप से गरीब, ईसाई परिवारों के बीच यह प्रथा थी कि गरीब ईसाई माता-पिता से उनकी अपनी एक बेटी को जीसस का आदेश बताकर कॉन्वेंट में शामिल जरुर कराया जाता था। किन्तु आज ज्यादातर ईसाई परिवार इस आदेश को नजरअंदाज कर रहे हैं क्योंकि एक तो दिन पर दिन चर्च की चारदीवारी से बाहर ननों के शोषण के किस्से बाहर आये, जैसा कि कई मेरी चांडी और सिस्टर जेष्मी समेत कई पूर्व ननों की किताबों में पढ़ने को मिला। साथ ही दूसरा आज के परिवारों में सिर्फ एक या दो बच्चे हैं, जिनके पास चुनने को कई कैरियर विकल्प हैं। केरल की महिलाएं अब स्वास्थ्य सेवा, आईटी और अन्य उद्योगों में काम करने के लिए दुनिया भर में अपनी छाप छोड़ रही हैं। हालत बदल चुके है आज महिलाएं प्राइवेट सेक्टर से लेकर रक्षा, विदेश स्वास्थ्य हर क्षेत्र में उसके लिए द्वार खुले हुए है जहाँ उस पर कोई ईसाइयत का धार्मिक बोझ भी नहीं है।

यूरोप की एक पूर्व नन सिस्टर फेडेरिका, जो अब एक नन नहीं हैं, उसने काफी समय तक चर्च में जीवन गुजारा और कॉन्वेंट के जीवन का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने के बाद फेडेरिका ने लिखा कि नन के आपसी समलैंगिक सम्बन्धों को अक्सर धार्मिकता का नाम दिया जाता है। या फिर एक नन बने रहने के लिए पादरियों की वासना को बुझाना पड़ता है। चर्च के अन्दर कोई लोकतंत्र नहीं है, केवल पदानुक्रम और पुरुष वर्चस्व है। आप इसी बात से अनुमान लगा सकते है कि जहाँ एक तरफ कॉन्वेंट में ननों की संख्या कम हो रही है वही दिलचस्प बात यह है कि पादरी बनने के लिए आगे आने वाले पुरुषों की संख्या बढ़ रही है।

वैश्विक स्तर पर ननों की गिरती संख्या के कई कारण हैं, कुछ समय पहले एक पत्रिका वूमेन चर्च वर्ल्ड ने इस मामले का पर्दाफाश करते हुए सैकड़ों ननों को गर्भपात के लिए मजबूर होने की कहानियों को उजागर किया गया था। पत्रिका ने लिखा था कि जिन ननों में गर्भपात करवाने से मना कर दिया था बाद में उनसे पैदा हुए बच्चों को यह दिखाकर कॉन्वेंट में रख लिया कि वह अनाथ थे। हालाँकि पत्रिका में इस सम्पादकीय लेख के आने के कुछ हफ्तों बाद संपादक को पत्रिका छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया था। जबकि उसी दौरान पोप फ्रांसिस ने स्वीकार किया था कि पादरियों और बिशपों द्वारा ननों का यौन शोषण चर्च में बड़ी समस्या बन चुकी है।

असल में चर्च के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बलिदानों में से महिलाओं का कुवांरापन समझा जाता है। नन खुद को मसीह की पत्नी मानकर प्रतिज्ञा लेती है यानि मानव जीवन साथी लेने के बजाय, वे खुद को जीसस के लिए समर्पित करती हैं। किन्तु पादरी जीसस की इन कथित पत्नियों का शोषण करने से गुरेज नहीं करते हैं। जो नन अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दे तो ठीक है अगर कोई प्रतिज्ञा नहीं तोड़ती तो उसे दुर्व्यहार, प्रताड़ना और निष्कासन की सूली पर चढ़ा दिया जाता है।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

पं. लेखरामजी का भाई चल बसा, परन्तु

धर्म की दुहाई देना और बात है, तप- त्याग की चर्चा करना और बात है, परन्तु धर्म-रक्षा के लिए कुछ कर दिखाना दूसरी बात है।

1894 ई. में सरदार अर्जुनसिंहजी आर्यसमाज दीनानगर के मन्त्री थे। एक मुसलमान मौलवी चिरागदीन ने शास्त्रार्थ की चुनौती दे रक्खी थी। अर्जुनसिंहजी ने पण्डित लेखरामजी को बुलाया। पण्डितजी तुरन्त शास्त्रार्थ के लिए पहुँच गये। चिरागदीन को सामने आने का साहस ही न हुआ। बाहर से एक अकबर अली नाम के मौलवी को बुलवाया गया। पण्डित लेखरामजी की अमृतभरी वाणी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे हिन्दू जो अब तक आर्यसमाज का घोर विरोध करते थे, अड़ गये कि पण्डित लेखरामजी को जाने नहीं देंगे। पण्डितजी को दो दिन और दीनानगर में रुकना पड़ा। उनकी ज्ञान-प्रसूता वाणी को सुनकर सारा नगर अपने-आपको धन्य-धन्य मान रहा था।

स्मरण रहे कि जब पण्डितजी दीनानगर पधारे थे तभी उनके भाई की मृत्यु हुई थी। पण्डितजी घर पर न जाकर धर्म-रक्षा के लिए दीनानगर आ गये। दीनानगर से उन्हें अमृतसर जाना पड़ा। वहाँ से मुरादाबाद एक सारस्वत ब्राह्मण युवक श्रीराम की शुद्धि के लिए चले गये। यह लड़का लोभवश ईसाई बन गया था।

पण्डित श्री लेखराम के हृदय में धर्म-प्रेम व जातिसेवा के लिए जो अग्नि धधकती थी, यह घटना उसका एक प्रमाण है। हम लोग इतना कुछ न भी कर सकें, परन्तु कुछ तो करके दिखाएँ।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री कृष्ण जन्माष्टमी (24 अगस्त) पर विशेष

प्रेरणा के प्रकाश पुंज योगेश्वर श्रीकृष्ण

हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति में महापुरुषों के जन्मदिन मनाने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। हमारे यहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी, योगिराज श्रीकृष्ण जी, महर्षि दयानंद सरस्वती जी का और अन्य महान विभूतियों का समय-समय पर जन्मोत्सव मनाया जाता रहा है। वर्तमान में योगिराज श्रीकृष्ण का 5247वां जन्मदिवस 24 अगस्त 2019 को पूरे देश और दुनिया में मनाया जाएगा। आइए, योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सफल बनाएं।

प्रेरणा के प्रकाश पुंज योगेश्वर श्रीकृष्ण

भारतीय संस्कृति के उन्नायक, योगेश्वर श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन मानव मात्र के लिए सद्प्रेरणाओं का प्रकाश पुंज है। बालक, विद्यार्थी, शिक्षक, मित्र, उपदेशक, योद्धा, याज्ञिक, तत्त्वदर्शी, सिद्ध- साधक, उपासक और महान योगी आदि सभी रूपों में श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन अद्वितीय एवं अनुकरणीय है। अधर्म को मिटाकर धर्म की स्थापना, अन्याय को हटाकर न्याय का पक्ष लेना, विषम से विषम परिस्थिति में संतुलित रहते हुए समाज को सुमार्ग दिखाना, विषाद से बचाकर प्रसाद की राह दिखाना इत्यादि योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज की अदभुत शिक्षाएं हैं। गीता के हर अध्याय के साथ योग शब्द जुड़ा हुआ है। इसका मतलब हर मनुष्य को योगमय जीवन जीना चाहिए।

श्रीकृष्ण संदेश

आज मानव समाज भय-चिंता-तनाव और अवसाद में डूबा हुआ है। इस भयावह स्थिति के निवारणार्थ श्रीकृष्ण का संदेश है- **"समत्वं योग उच्यते"** अर्थात् सुख-दु:ख, हानि-लाभ-मान-अपमान, जय-पराजय हर स्थिति-परिस्थिति में समभाव में रहना ही योग है। हर हाल में, हर काल में, हर स्थिति में, हर परिस्थिति में संतुलन बनाकर चलने वाला ही योगी है। श्रीकृष्ण का कथन है **"योग:कर्मसु कौशलम्"** कर्म की दक्षता-कुशलता ही योग है। इसलिए अपने हर कर्म को कुशलता पूर्वक करें, सोच-समझकर निर्णय लें, उचित समय पर कार्य करने की आदत डालें। अगर मनुष्य श्रीकृष्ण की शिक्षाओं को मानकर उन्नति प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ेगा तो जीवन अवश्य सफल होगा।

जरा सोचिए,
हम क्या से क्या हो गए.....

योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव संपूर्ण भारत में ही नहीं विश्व में मनाया जाता है। महीनों पूर्व ही इस महोत्सव की तैयारियां शुरू हो जाती हैं, मंदिरों को सजाया जाता है जो कि अपने आपमें अच्छी बात है। किंतु जो श्रीकृष्ण इस पुण्यमय भारत की महान संस्कृति और संस्कारों, आदर्शों, प्रेरणाओं के आधार स्तंभ हैं, ज्ञानियों में अग्रणी वेदज्ञ, नीतिज्ञ, त्यागी-तपस्वी, धर्मात्मा महापुरुष हैं, उनके नाम पर अपमान पूर्ण बातें बनाकर ऊंची लाउडस्पीकर की आवाज में उन्हें माखन चोर, छलिया, रणछोड़, रासलीला रचाने वाला, हजारों पत्नियां रखने वाला, आदि तुकबंदी करके गाना-बजाना-नाचना करना, हुल्लड़ करना, ऐसे ही बेतुके नाटकों का मंचन करना, बेढंगी झांकियां निकालना आदि क्या श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का उचित स्वरूप है? जरा सोचिए, इस सारे कृत्य से समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, आज धर्म, संस्कृति और संस्कारों का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है, नैतिक मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है, रिश्ते-नातों में रूखापन है, संस्कृति-सभ्यता दम तोड़ रही है, चारों तरफ, निराशा-हताशा-उदासी-चिंता-भय-भ्रम का वातावरण है। धर्म के नाम पर लोभ-लालच-स्वार्थ सिर चढ़कर बोल रहा है।

भागने का नहीं,
जागने का संदेश देते हैं- श्रीकृष्ण

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज का सही अर्थों में जन्मदिन मनाएं, उनकी प्रेरणाओं को अपनाएं, निराशा- उदासी-चिंता, भय- भ्रम को दूर भगाएं, आशा-उत्साह-उमंग- उल्लास को धारण करें, स्व कर्त्तव्य-अकर्तव्य का मर्म समझें, व्यक्ति- परिवार समाज-देश और दुनिया में श्रीकृष्ण के पवित्र संदेश को जन-जन तक पहुंचाने हेतु उपयोगी, सहयोगी और योगी बनें, जीवन की पगडण्डियों पर निरंतर आगे बढ़ते जाएं, न रुकें-न झुकें-न थकें, अपने कर्त्तव्यों को निरंतर करते जाएं। योगेश्वर श्रीकृष्ण मनुष्य को लकीर

का फकीर बनने की प्रेरणा नहीं देते वे तो मनुष्य के सर्वांगीण विकास के पक्षधर हैं। उन्होंने मानवमात्र को भागने की नहीं जागने का संदेश दिया है। श्री कृष्ण के जीवन की प्रत्येक घटना मनुष्य को लक्ष्य प्राप्ति का संदेश देती है। राक्षसों, अत्याचारियों, अधर्मियों के विशाल दुर्ग को ध्वस्त करने की उनकी नीति और पराक्रम यह दर्शाता है कि दुष्ट प्रवृत्ति कितनी ही ताकतवर क्यों न हो लेकिन उसका अंत जरूर होता है। जबकी सज्जन, धार्मिक और सत्य को मानने वाले के जीवन में चाहे कितने भी कष्ट क्यों न आ जाएं लेकिन जीत धर्म की ही होती है।

धर्म धारण करने का उपदेश

योगिराज श्रीकृष्ण युधिष्ठिर को संबोधित करते हुए कहते है कि हे युधिष्ठिर मैं तुम्हारे पक्ष में इसलिए नहीं खड़ा हूं कि

- जारी पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आरम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

सतीश चड्डा, महामंत्री,
आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ओर से आर्यसमाज की "सहयोग" योजना के लिए ईको वैन भेंट

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित सहयोग योजना के प्रेरक पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी ने अपने करकमलों से पिछले दिनों सहयोग संग्रह हेतु ईको वैन का विधिवत् उद्घाटन किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी के साथ सहयोग की पूरी टीम भी उपस्थित रही। महाशय जी ने सहयोग की टीम को आशीर्वाद देते हुए निरंतर सेवापथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा और आशीर्वाद प्रदान किया। यह ईको वैन दिल्ली और एन.सी.आर में सहयोग के सभी केंद्रों से इकटठे किये हुए वस्त्र एवं अन्य जरूरत के समान एकत्रित करने का प्रमुख साधन है। ज्ञात हो कि सहयोग के द्वारा उन सभी जरूरतमंद लोगों को वस्त्र आदि जरूरत के सामान उपलब्ध कराए जाते हैं जो किसी कारण वश अभावपूर्ण जीवन जीने को मजबूर हैं। सहयोग के प्रयास से उन तमाम लोगों और बच्चों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ जाती है, जिन्हें सहयोग की सहायता प्राप्त होती है।

महाशय धर्मपाल जी सहयोग के लिए भेंट की गई नई गाड़ी पर स्वास्तिक एवं ओ३म् लिखते हुए। इस अवसर पर उपस्थित सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी।

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन, वाराणसी के लिए स्थान एवं भव्य शोभायात्रा हेतु मार्ग निर्धारित

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' एवं उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन चौधरी लान्स्, नरिया, वाराणसी में 11-12 -13 अक्टूबर 2019 आयोजित होगा। इस कार्यक्रम की व्यवस्थाओं हेतु पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी में प्राचार्य डा. नंदिता शास्त्री जी की अध्यक्षता तथा आचार्य रीता विमर्षणी के सहयोग से बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में समारोह स्थल व आनन्द बाग पर आयोजन तथा शोभायात्रा की सुंदर व्यवस्थाओं पर विचार विर्मश हुआ। सभी उपस्थित आर्यजनों एवं स्थानीय समाजों के अधिकारियों ने उत्साह पूर्वक अपने विचार व्यक्त किए और विशाल आयोजन को सफल बनाने हेतु दृढ़ संकल्प लिया।

शोभा यात्रा - नरिया बी. एच. यू. गेट, गुरु रविदास गेट, नगवां, अस्सीघाट, भैदनी, रविन्द्र पुरी होते हुए आनन्द बाग,जहां सन् 1869 में काशी नरेश की उपस्थिति में महर्षि देव दयानन्द का पौराणिक पंडितों के साथ वेदों मंत्रों के आधार पर शास्त्रार्थ हुआ था, उस ऐतिहासिक स्थल पर समाप्त होगी। उपरोक्त कार्यक्रम में यज्ञ, संगीतमय भजन, विभिन्न विषयों पर प्रेरक उद्बोधन, आकर्षक शास्त्रार्थ, आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के आयोजन के अतिरिक्त वैदिक साहित्य तथा विभिन्न संस्कारों हेतु यज्ञ का सामान उपलब्ध होगा।

इन बैठकों मे विभिन्न निर्णयों के क्रियान्वयन हेतु विभिन्न सेवा प्रदाताओं से सम्पर्क किया गया। इन बैठकों मे सर्वश्री प्रमोद कुमार आर्य, दिनेश आर्य, सुरेन्द्र आर्य, राजकुमार वर्मा, अरूण कुमार आर्य, कपिल देव आर्य, विजय कुमार आर्य, रामकिशन आर्य, प्रमोद कुमार आर्य, अखिलेश आर्य, पंकज आर्य, वेद प्रकाश आर्य, रमेश कुमार आर्य, कृष्ण कुमार आर्य, शम्भूनाथ शास्त्री, सत्येन्द्र आर्य, राज कुमार आर्य, संतोष कुमार आर्य, प्रदीप कुमार आर्य, चन्द्रमा प्रसाद आर्य, विनोद वर्मा, अशोक, ने सतीश चड्ढा, महामंत्री व सुरिन्द्र चौधरी, व्यवस्था सचिव, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के साथ विचार विमर्श किया। सतीश चड्ढा ने सभी आयोजन स्थलों व मार्ग का निरिक्षण करने के उपरांत आयोजन स्थल को सीर गोवर्धन से 'चौधरी लान्स्, नरिया निकट बी एच यू मुख्य द्वार, के पास मे आयोजित करने का सुझाव दिया, जिस पर सब की सहमति होने पर कार्यक्रम आयोजन स्थल को बदला गया।

विभिन्न समितियों एवं उपसमितियों के गठन की रूपरेखा प्रस्तुत की गई । आयोजन मे अन्य क्षेत्रों से पधारने वाले आर्यजनों के आवास की व्यवस्था की जायेगी। आयोजन स्थल पर प्रतिदिन सात्त्विक सहभोज की व्यवस्था भी की जायेगी। प्रचार हेतु शहर के विभिन्न मुख्य चौराहों पर फलैक्स, विज्ञापन पट इत्यादि लगाये जायेंगे। कार्यक्रम में सहयोग या जानकारी हेतु प्रमोद आर्य 8052852321, दिनेश आर्य 9335479095, राज कुमार वर्मा 9889136019 से सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के
150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन
11-12-13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में निःशुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

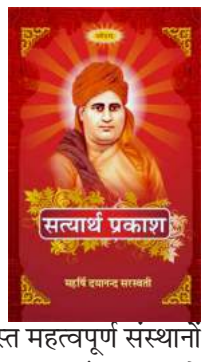

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ⋆ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ⋆ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ⋆ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

'ओ३म-गायत्री मन्त्र' को बनाया सिक्किम की राजभेंट

सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी द्वारा सिक्कम राजभवन की ओर से भेंट किए जाने वाले राजभेंट को बदल कर 'ओ३म् एंव गायत्री मन्त्र' किया गया है। गत दिनों सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द आर्य जी एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने राजभेंट का अनावरण किया और राजभेंट को स्वीकार भी किया। परमात्मा के निज नाम ओ३म को राजभेंट पर अंकित करने के लिए महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का आर्यसमाज की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मानवमात्र की सहायतार्थ तैयार किए गए मोबाइल एप्प

आर्यजनों से निवेदन है कि इन्हें अपने मोबाइल में डाउनलोड करें और प्रचार में सहयोगी बनें

Swami Dayanand, Aryasamaj and his contribution in Dalit upliftment

- Dr. Vivek Arya

Continue from last issue

Swami Ji difference with Gandhi Ji increased with the passage of time when he drew attention of the congress towards the harassment of Christian Chamars by police in environs of Delhi who had accepted Shuddhi and returned back to Hinduism by Aryasamaj. In April 1919 he published a booklet of eighty pages entitled 'jati ke dinon ko mat tyago' (do not abandon the poor of our nation). Books first seventy pages dealt with the methods used by Christian missionaries in India. Nearly half of the book was taken up by translations from an article in the theosophist about the nefarious activities of Portuguese missionaries and the inquisition, followed by an indictment of protestant missionary work, in particular that of the Delhi Cambridge mission. Thus nearly ninety percent of the pamphlet was aimed at demonstrating missionaries had always used unfair, immortal and underhand mean. The last ten pages deled with constructive point. Since the untouchables were becoming Christians for other than religious reasons, the way to prevent those happenings was by educating their children, by protecting them from the police, and by helping them to achieve social uplift. Since the orthodox would not take up that task, it had become a duty of the aryas to be a crucial one because the greatest danger of the conversion of the untouchables to Christianity was that they became denationalized and supporters of the raj. The swami wrote "if the seven crores of untouchables of India, exasperated by the attitude of the twice born, become Christian , then our orthodox leaders, supporters of independence, will not be able to do anything, except be very sorry." (Jati ke dinon ko mat tyago. P-72)

In 1920 Calcutta congress session Swami Ji proposed three-point program with special section on the untouchables, but congress declared consideration of this inopportune.(shraddha 13 August,14,17 Sept. 1920). Swami Ji writes in liberator that "even Mahatma Gandhi had not realized its importance and was taken up with his resolution of non-violent non-cooperation resolution had been passed by the khilafat committee and Mahatma Ji threatened to sponsor it outside the congress, if it was not passed there. I thought it to be a misfortune if Mahatma Ji would be obliged to sever his connection with the oldest political movement in India" (INCON-p 121)

Swami Ji was surprised on hearing Maulana Shaukat Ali's doings in Calcutta session in hearing of more than 50 persons, while the merits of non-violence were being discussed. Maulana said "Mahatama Gandhi is a shrewd bania. You do not understand his real object. By putting you under discipline, he is preparing you for guerrilla warfare. He is not such an out-an-out non-violencist as you all suppose" (INCO P-122) Swami Ji forwarded his message to Gandhi Ji Ssecretary that his motives were being misrepresented by his trusted colleagues. The next year 1921 Nagpur session Swami Ji again noticed the same pranks being played by the big Ali brothers. In Delhi the Aryasamaj had been working for the depressed classes, and the swami tried to get the local congress to allow them access to the wells. But it was in vain……..

Swami Ji reached Delhi on 17th august, 1921 and found that the question of removal of untouchability was becoming very acute. He called a few of chief chaudharies and asked the full story. They gave the following story- "The Secretary of the Delhi congress committee called the chaudharies of the Chamars and requested them to give to the congress as many as four-Anna paying members as they could. The reply of the elders was that unless their grievance as regards the taking of water from the public wells was removed, they could not induce their brethren to join the congress. The Secretary was a choleric man of hasty temper and said they wanted Swarajya at once but the grievance of the Chamars could wait and would be removed by and by. One of the young man got up and said-our trouble from which we are suffering for centuries must wait solution, but the laddu of Swarajya must go into your mouth at once! We shall see how you obtain Swarajya immediately!!"

He wrote to Gandhi Ji after Nagpur session in Sept. 1921-

"I wired from Lahore that I would apply for financial aid through the Delhi provincial Congress Committee but on reaching the Delhi. I found that the uplift of the depressed classes through the Congress was difficult. The Delhi and Agra Chamars simply demand that they be allowed to draw water from wells used by the Hindus and Mohammedans and that water be not served to them through bamboos and leaves. Even that appears impossible for the Congress Committee to accomplish. Not only this; a Muslim trader of sadr went to the length of saying that even if Hindus allowed (these man) to draw water from common wells, the Muslims would forcibly restrain them from drawing water because they (the Chamars) ate carrion. I know that there are thousands of these Chamars who do not either drink wine or eat flesh of any kind and few of them who eat carrion are being weaned by the aryasamajists from that filthy habit. But I ask – do Hindu and Muslim meat eaters devour flesh of living cattle? Do they not eat the flesh of the cattle when they are dead?

At Nagpur you laid down that one of the conditions for obtaining Swarajya within 12 months was to give their rights to the depressed classes and without waiting for the accomplishment of their uplift, you have decreed that if there is a complete boycott of foreign cloth up till 30th September, Swarajya will be an accomplished fact on the 1st of October. The extension of the use of Swadeshi cloth is absolutely necessary but as long as six and half crores of our suppressed classes are taking refuge with the British bureaucracy so long will the extension of Swadeshi be impossible". (INCO.P-134,135)

Swami Ji in his letter dated June 30th 1922 wrote to General Secretary of all India Congress Committee that the following demands of the depressed classes ought to be complied with at once namely that -

1. They are allowed to sit on the same carpet with citizens of other classes
2. They get the right to draw water from common wells and
3. Their children get admission into National Schools and Colleges and are to mix freely with students drawn from the so-called higher castes.

- To be continued .....

23वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 23वें परिचय सम्मेलन का आयोजन 1 सितम्बर, 2019 को आर्यसमाज आदर्श नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा जी के अनुसार सभी आय वर्ग एवं शैक्षिक योग्यता स्तर के युवक-युवतियों का यह परिचय सम्मेलन भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है। महर्षि देव दयानंद की शिक्षाओं को सर्वोपरि मानते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समय-समय पर ऐसे परिचय सम्मेलनों का आयोजन लंबे समय से करती आ रही है। महर्षि दयानंद जी के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार आर्य युवक-युवतियां विवाह करें। इस परंपरा, सिद्धांत और मान्यता को आगे बढ़ाते हुए आर्य परिवारों की युवा पीढ़ी की सेवा में यह अदभुत प्रेरणाप्रद कार्य है। इससे पूर्व 22 आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। जिनमें दिल्ली, इंद्रौर, आणंद, रोजड़, गुजरात, जम्मू-कशमीर आदि स्थानों में आयोजित सम्मेलनों में आर्य परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन को सफल बनाया। समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म इसी पृष्ठ पर पृथक से प्रकाशित किया गया है। इस पंजीकरण फार्म को **www. thearya samaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। और फोटोप्रति भी मान्य है। **www. matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन पंजीकरण भी कर सकते हैं।

– **अर्जुनदेव चड्डा**
राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

23 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टेलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/..... व्यक्तिगत मासिक आय.....

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:..... दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेष:**

मैं.....घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकारी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़ आदर्श नगर, दिल्ली-110033

दिनांक : 1 सितम्बर 2019, रविवार **समय :- प्रात: 10.00 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
श्री अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428
आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़, आदर्श नगर, दिल्ली-110033
श्री रविन्द्र बत्रा, प्रधान, मो. 07011496219, श्री प्रविण बत्रा, मंत्री, मो. 09868993911, श्री देवेन्द्र जावा, कोषाध्यक्ष, मो. 09212114202

नोट : 1. ई-मेल एड्रेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्णसन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 10 दिन पूर्व भेज दें, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्यसमाज यमुना विहार द्वारा 29 अगस्त से 01 सितम्बर 2019 तक वेद प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन किया जा रहा है। जिसमें यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के सुंदर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा आचार्य रामचंद्र दर्शनाचार्य जी, भजन सुश्री अंजलि आर्या जी और प्रवचन डॉ. नरेंद्र वेदालंकार जी के होंगे। 1 सितम्बर 2019 को यज्ञ की पूर्ण आहुति के साथ विशेष आमंत्रित श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं महामंत्री श्री विनय आर्य जी आदि महानुभावों के उद्बोधन होंगे। – ***मुकेश आर्य, मन्त्री***

वेद प्रचार मंडल उ.पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व के अवसर पर

वैदिक भजन संध्या

वेद प्रचार मंडल उत्तर पश्चिमी दिल्ली द्वारा श्रावणी पर्व के अवसर पर वैदिक भजन संध्या का आयोजन 25 अगस्त, 2019 को स्वामी श्रद्धानन्द पार्क (कैप्टन सतीश मार्ग), निकट नीलाम्बर अपार्टमैंट, रानी बाग में सायं 5:30 से 7-30 बजे तक किया जा रहा है। इस अवसर पर भजन श्री अंकित उपाध्याय जी के होंगे। अतिथि के रूप में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा एवं श्री नीरज आर्य होंगे। – निवेदक :-

सुरेन्द्र आर्य प्रधान
जोगेन्द्र खट्टर महामन्त्री

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके।-***मन्त्री, सार्वदेशिक सभा***

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 4 का शेष

तुम मेरी बुआ कुंती के पुत्र हो बल्कि मैं तो तुम्हारे साथ इसलिए हूं क्योंकि तुम धर्म की लड़ाई लड़ रहे हो। धर्म तुम्हारी कर्त्तव्यनिष्ठा में समाया हुआ है और तुम हर हाल, हर स्थिति में धर्म का अनुसरण कर रहे हो। इससे ज्ञात होता है कि हर मनुष्य को जीवन की बड़ी से बड़ी आपदा और समस्याओं में धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म के विषय में दुर्योधन ने स्वयं कहा कि मैं जानता हूं कि धर्म क्या है? लेकिन मेरी धर्म में प्रवर्ती नहीं होती और मैं ये भी जानता हूं कि अधर्म क्या है उसमें मेरी प्रविर्ती रहती है। श्रीकृष्ण का धर्म को लेकर यही संदेश है कि मनुष्य को धर्म में प्रवृत्त रहना चाहिए।

– ***आचार्य अनिल शास्त्री***

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क शाहदरा में श्रीकृष जन्माष्टमी एवं श्रावणी पर्व 24 अगस्त को प्रात: 7:30 बजे से होगा। भजन श्रीमती सावित्री आर्या एवं प्रवचन आचार्य धन कुमार शास्त्री जी के होंगे।

– ***जगदीश प्रसाद शर्मा, प्रधान***

श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज कालकाजी नई दिल्ली में श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 26 अगस्त से 1 सितम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। भजन श्रीमती सुदेश आर्या एवं प्रवचन आचार्य सोमदेव शास्त्री (अजमेर) के होंगे। – ***रमेश गाडी, मन्त्री***

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

– ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। – ***संयोजक***

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये। मात्र

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

नि:शुल्क योग शिविर एवं आध्यात्मिक सत्संग

आर्यसमाज मोलडबन्द विस्तार के तत्वावधान में 11 से 15 सितम्बर, 2019 तक नि:शुल्क योग शिविर एवं आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन यादी गार्डन मोलडबन्द विस्तार में किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा पं. बुधराम शास्त्री एवं उपदेशक पं. योगेशदत्त जी (बिजनौर) होंगे। अतिथि के रूप में दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी भाग लेंगे।

– ***गजेन्द्र सिंह चौहान, मन्त्री***

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

सरकारी/ गैर सरकारी/ निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, गुरुकुलों, पाठशालाओं, आश्रमों में आर्ष पाठ विधि से विद्या अध्ययन करने वाले अथवा ऐसे छात्र-छात्राओं जो अन्य विषयों के साथ संस्कृत साहित्य का भी अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन कर रहे हैं अथवा ऐसे विद्यानुरागी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं अथवा जिनके माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं, को आर्यसमाज की ओर से छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपरोक्त के अन्तर्गत आने वाले छात्र-छात्राएं अपना नाम, पिता/माता/संरक्षक का नाम, पता, विद्यालय/संस्थान का नाम लिखते हुए आवेदन करें। आवेदन पत्र पर विद्यार्थी के प्रधानाचार्य/आचार्य के हस्ताक्षर सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य हों। इच्छुक विद्यार्थी/संस्थान अपने आवेदन पत्र **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। – ***महामन्त्री***

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए। जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी.डी/पैन ड्राइव के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें। – ***महामन्त्री***

आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। – ***सम्पादक***

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। – ***महामन्त्री***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 अगस्त, 2019 से रविवार 25 अगस्त, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22-23 अगस्त, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 अगस्त, 2019

रघुमल आर्य कन्या स्कूल में विद्यार्थी कार्यशाला का सफल आयोजन

प्रतिष्ठा में,

3 अगस्त 2019 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकंड्री स्कूल के प्रांगण में आर्य केंद्रीय सभा के उपप्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी के द्वारा एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला लगातार 1:30 घंटे तक चली, जिसमें वैदिक अभिवादन, ईश्वर का नाम ओ३म्, समय प्रबंधन, कक्षा में पढ़ने का तरीका और स्वयं पढ़ाई करने की विधि आदि विषयों पर उपस्थित छात्राओं को प्रेरणाप्रद विचार प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्री सुरेंद्र रैली जी ने छात्राओं को वैदिक अभिवादन का महत्व बताते हुए कहा कि दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करना ही वैदिक अभिवादन की श्रेष्ठ विधि है। ईश्वर के मुख्य और निज नाम ओ३म् की सरल, सहस शैली में व्याख्या करते हुए आपने ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए ओ३म् की मुख्यता और प्रमुखता को बच्चों के समक्ष सिद्ध किया। इसके लिए आपने कई उदाहरण भी प्रस्तुत किए। समय प्रबंधन आज के युग की सबसे बड़ी जरूरत है। समय का प्रवाह निरंतर बह रहा है। समय एक अमूल्य धन है। समय का सदुपयोग एक बहुत बड़ी कला है। समय को किस तरह मैनेज किया जाए, यह अपने आपमें अनुपम विषय था। जिसे रैली जी ने बहुत ही उपयोगी तरीके से बच्चों को समझाया। छात्राओं को कक्षा में पढ़ने की विधि और स्वयं पढ़ाई करने का तरीका बताते हुए उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वयं का स्वयं पर पूरा अनुशासन होना ही चाहिए। सफलता की सीढियां चढ़ने के लिए मन किस तरह से एकाग्र किया जाता है और उसे पढ़ने में कैसे लगाया जाता है, किस तरह से पढ़ने पर ज्यादा लाभ होता है, स्मरण शक्ति कैसी बढ़ती है। इन तमाम बारीकियों को रैली जी ने सरलता से समझाया। रघुमल कन्या सीनियर सैकंड्री स्कूल की छात्राओं ने पूर्ण एकाग्रता के साथ कार्यशाला के आयोजन का लाभ उठाया और स्कूल की प्रिंसीपल एवं अधिकारियों द्वारा रैली जी के धन्यवाद के साथ कार्यशाला संपन्न हुई। – ***प्रबन्धक***

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह